DR. ANWAR ALAM
UG HISTORY (HONS) SEM-VI
PAPER-CC-14



# INDIA AS NUCLEAR POWER
## परमाणु ऊर्जा के रूप में भारत

किसी भी देश की ताक़त का अंदाजा उसकी सैन्य शक्ति और उसकी अर्थ व्यवस्था से लगाया जाता है। दुर्भाग्य से आज के विकसित दौर में भी दुनिया का सब से बड़ा सच लाठी है। जिस देश के पास जितनी अधिक शक्ति है वह दुनिया का उतना ही बड़ा शक्तिशाली देश माना जाता है। 1945 में अमेरिका द्वारा जापान पर परमाणु बम का विस्फोट उसे विश्व की महाशक्ति के रूप में स्थापित कर गया। उसके बाद सोवियत रस ने भी आणविक हथियारों के बूते पर दुनिया की दूसरी महाशक्ति बनने में सफलता प्राप्त की। फिर इंग्लैण्ड, फ्रांस, चीन आदि देश भी परमाणु बमों के निर्माण के कारण बड़ी शक्ति के रूप में उभरकर सामने आए आज भी किसी देश की आर्थिक और सांस्कृतिक समृद्धि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में इतनी प्रभावी नहीं है जितनी की उसकी पारमाणविक सामग्री के उत्पादन एंव व्यापार के सामर्थ्य होने में है। इस लिये हम कह सकते है कि आज के विश्व में परमाणु हथियार एक देश की तकनीकी विकास की दृष्टि से प्रमुख आधार है। तमाम अंतर्राष्ट्रिय दबावों के बावजूद 11 मई एंव 13 मई 1998 को दूसरी बार परमाणु विस्फोट करके भारत ने नए भू-राजनीतिक. आर्थिक शक्ति का एलान किया।

**भारत में परमाणु शक्ति का विकास :→** भारत में सन् 1948ई० में परमाणु आयोग की स्थापना डा० होमी जहांगीर भाभा की अध्यक्षता में की गई थी। तभी मुम्बई के समीप ट्राम्बे में एक परमाणु-शक्ति केन्द्र की स्थापना भी की गई। एक परमाणु विद्युत-गृह भी स्थापित किया गया जिससे उत्पादित बिजली का आज अनेक कार्यों के लिए उपयोग किया जा रहा है।

इसके बाद भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण 18 मई 1974 को राजस्थान के जैसलमेर जिले के पोखरण नामक स्थान पर करके सारी दुनिया को चौंका दिया। फिर 24 वर्षों की चुप्पी के बाद 11 एवं 13 मई 1998 को क्रमशः 3 व 2 परमाणु विस्फोट करके भारत विश्व में छठा परमाणु शक्ति सपन्न राष्ट्र बन गया। विश्व में शांति का प्रबल समर्थक रहते हुए तथा पिछले 50 वर्षों में परमाणु अस्त्रों को सर्वथा नष्ट कर देने की बराबर अपील करते रहने के बावजूद भारत ने परमाणु विस्फोट, परमाणु अस्त्रों का प्रयोग करने की मंशा से नहीं किया। बल्कि अपने बिगड़ते जा रहे शक्ति-संतुलन को ठीक करने के लिए ही किया। क्योंकि 1962 में चीन भारत युद्ध और फिर चीन का परमाणु देश के रूप में उभरने के कारण भारत ने अपने परमाणु कार्यक्रम को आरम्भ करने के बारे में गहराई से सोचा और फिर इसपर गंभीरता पूर्वक कार्य आरम्भ कर दिया और एक शक्तिहीन राष्ट्र की छवि को बदलने के लिए तैयार हो गया। मई 1998 ई० में भारत के परमाणु विस्फोट करने के साथ पश्चिमी दुनिया विस्मित रह गई तथा भारत के मित्र देशों ने इसका गर्व से स्वागत किया।

**परमाणु शक्ति बनने के बाद भारत के बदलते अंतर्राष्ट्रीय संबंध:** → भारत के परमाणु शक्ति बनने के साथ ही अंतर्राष्ट्रीय सतह पर एक नया मोड़ आया।

विस्फोट होते ही अमेरीका, जापान, आस्ट्रेलिया, स्वीडन आदि देशों ने भारत को दी जाने वाली आर्थिक सहायता पर तुरंत प्रतिबंध लगा दिया। जबकि ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी आदि ने प्रतिबंध तो नहीं लगाया किन्तु सी.टी.बी.टी. पर हस्ताक्षर करने का दबाव डाला तथा ग्रुटनिरपेक्ष आंदोलन के अनेक

Teacher's Signature.....

सदस्य राष्ट्रों ने भारत के परमाणु शक्ति बन जाने का स्वागत किया। इसी परमाणु विस्फोट की पाकिस्तान ने प्रतिक्रिया यह दी कि उसने एक सप्ताह में ही दोबारा परमाणु विस्फोट कर दिया और इस प्रकार परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्रों की श्रेणी में वह भी आ गया तथा भारत के परमाणु विस्फोट के औचित्य को उसने सिद्ध कर दिया। भारत के परमाणु राष्ट्र बन जाने के बाद संबधों का दौर शुरु हुआ जिसमें आर्थिक प्रतिबंध लगाने वाले देशों ने धीरे धीरे ये प्रतिबंध हटाना शुरु कर दिया।

पाकिस्तान ने कारगिल में युद्ध छेड़ कर और पराजित होकर अंतत: अपनी सेनाओं को वापस बुला लिया। भारत को कारगिल युद्ध में विश्व समुदाय का पूरा समर्थन मिला।

संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में अनेक देशों ने भारत को बड़ी शक्ति मानते हुये उसे सुरक्षा परिषद् का सदस्यता के लिए मुखर समर्थन दिया। अमेरीका तथा यूरोप के अनेक देश अब भारत को २१वीं शताब्दी में एक बड़ी शक्ति के रुप में उभरते हुए देश के तौर पर स्वीकार करने लगे। भारत के साथ अमरीका का सकारात्मक रुख उभर कर सामने आया। व्यापारिक तौर पर चीन के साथ भी भारत का संबंध काफी मजबूत हुआ।

भारत के प्रति अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का यह बदलता दृष्टिकोण भारत को अनेक व्यापारिक हितों का पोषक मानकर ही नहीं बना है बल्कि इसलिए भी बना है कि पारमाणिक शक्ति बनने के बाद भारत के तकनीकी विकास की क्षमता आर्थिक प्रतिबन्धों को झेल लेने में सामर्थ्य तथा भारत एक बड़ी शक्ति के उभरने की संभावनाएँ एक साथ और स्वत:

Teacher's Signature.....

उजागर हुई है। अंतर्राष्ट्रीय व्यापार संगठन में भारत का उभरता नेतृत्व रूस के अलावा अमरीका, चीन, फ्रांस, इंग्लैंड दक्षिण एशिया के विभिन्न देशों से बनते सुदृढ़ संबंध भारत की उपलब्धि की महत्वपूर्ण झलक है जो उसने परमाणु शक्ति बनने के द्वारा हासिल की है। भारत की अचानक बढ़ी इस सैन्य प्रतिरोधक क्षमता से भारत की उपेक्षा अब सहज नहीं रह गई है।

—x—

Teacher's Signature.....